सकारात्मक पुष्टि स्पंदन सचित्र संस्करण भाग - अष्ट

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

"बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

हे जीवन!

हे धर्म!

हे भक्ति!

हे ज्ञान!

हे सिद्धि

हे सिद्धांत!

हे मान्यता!

हे श्रद्धा!

हे विश्वास!

हे मन!

हे तन!

हे धन!

हे गुरु!

हे माता पिता!

हे पत्नी!

हे कुटुंब!

हे मित्र!

हे सखी!

हे प्रीत!

हे आत्मा!

हे परमात्मा!

कहीं भी निहालो

कहीं भी संवारो

कहीं भी अध्ययनों

कहीं भी तपस्यो

कहीं भी ध्यानों

कहीं भी भक्तों

कहीं भी जुडो

कहीं भी स्पर्शों

कहीं भी पहुँचो

कहीं भी उपाधों

हाँ! " बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

कान्हा! तेरा चरित्र को समझा

कान्हा! तेरे पुरुषार्थ को पूजा

कान्हा! तेरे ज्ञान को सांधा

कान्हा! तेरी लीला में डूबा

कान्हा! तेरी रीत को अपनाया

कान्हा! तेरी प्रीत को संवारा

ओहह!

" बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

जन्म जन्म धरे

जीवन जीवन चरे

साँस साँस भरी

घट घट चले

घडी घडी दौडे

ओ कान्हा!

" बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

"Vibrant Pushti "

एक व्यक्ति

दो व्यक्तियों

तीन व्यक्तियों

चार व्यक्तियों

पाँच व्यक्तियों

छह व्यक्तियों

शायद यही ही हम और हमारा कुटुंब

हाँ! अकेले रहे तो अकेले

पर

जुडते गये तो एक कुटुंब

सोचते है अब

जुडते जाते है तो

क्या लीला

क्या स्थिति

क्या गति

होती है?

एक बोले तो अनेक बोले

एक बोले तो अनेक अर्थ होय

एक सुने तो अनेक अनुसंधान होय

एक सुनाये तो अनेक सुनाते होय

एक कुछ करे तो अनेक करने को स्वतंत्र होय

एक न करे तो अनेक छूप छूप करते होय

एक न करे तो कोई न करते होय

एक पूछे तो अनेक सूचन होय

एक सिद्धांत समझ तो अनेक सैद्धांतिक समझ होय

एक को कोई हक होय तो अनेक हकदार होय

एक रुके तो अनेक रुकने का हक होय

एक वचन तो अनेक निभाते होय

एक रिवाज हो तो अनेक प्रथा होय

एक धर्म धरा तो अनेक धर्म धराय

एक मान्यता पाई तो अनेक मान्यता अपनायी

एक रीति जगाई तो अनेक रीति उभराई

एक भोजन पकाई तो अनेक स्वाद पकवाई

नीति नीति से अनेक मार्ग दर्शाई

रीति रीति से अनेक कर्म कराई

मति मति से अनेक समझ समझाई

तो एक से जुडाई

तो अनेक जुडाई

तो एक के साथ

तो अनेक साथ

तो एक कुटुंब

तो अनेक कुटुंब

तो एक संस्कार

तो अनेक संस्कारे

तो एक कर्म

तो अनेक कर्म

तो एक धर्म

तो अनेक धर्म

तो एक जीवन

तो अनेक जीवन

तो एक अर्थ

तो अनेक अर्थ

हाँ! यह कैसा व्यक्तित्व?

" Vibrant Pushti "

नही नही ऐसा नही ही हो सकता है?

जो हमारे शास्त्रों - पुराणों और संस्कृति में लिखा है

1. महाज्ञानी रावण श्री सीताजी का हरण कर सकता है

या

2. श्री सीताजी की सतीव्रता में कोई असामर्थ्य सामान्यता है?

या

3. मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम श्री धर्म सहध्यायी सीताजी का त्याग करे?

भ्रमित की न कोई रीत है।

चलित की न कोई गति है।

न कोई ऐसी मान्यता है।

न कोई ऐसी धारणा है।

न कोई सैद्धांतिक अनेक अर्थ है।

न कोई धर्म की रक्षा के लिए कोई संस्थापना है।

अति गहराई से अध्ययन करके आध्यात्मिक ऋषि मुनियों की कोई परंपरा भी ऐसी नही हो सकती है जिससे हमारी धर्म यज्ञता और संस्कार शिष्टता में कोई निम्नता है।

न कोई संयमता और न कोई ऐसी तांत्रिक - मांत्रिक - यांत्रिक साक्षरता है, जो हमारे आचार्यों, भक्तों, तत्वचिंतको ऐसी बहुरुपी ऋढिचुस्तता को अपनाये?

नही नही हमारी संस्कृति में ऐसी कोई योग्य मान्यता हो ही नही सकती। यह कोई अशिक्षित गैरमार्गिय षडयंत्र है।

क्या हम इतना योग्य समझ तो है ही कि हमें सत्यता से अध्ययनता की सैद्धांतिक विश्वास नियंता हो।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

अरे! ओहह! आपको अच्छा घर, अच्छा भोजन, अच्छे कपडे, अच्छा सुख और अच्छा काम। ओहह! यह तो बहुत ही सरल है। यह तो आप खुद ही आराम से करके खुदके ही कर्म से पा सकते हो।

अच्छा!

हाँ!

प्रथम तो हमें तय करना पडेगा

मुझे कौनसा प्रकार का घर होना चाहिए

मुझे कौनसे प्रकार के भोजन चाहिए

मुझे कौनसे प्रकार के सुख चाहिए

मुझे कौनसे प्रकार के काम चाहिए

हाँ! जो व्यक्ति यह ही तय न कर सकता हो तो वह सदा यह घर, भोजन, कपडे, सुख और काम नही पा सकता।

सोच लो!

सूची बना डालो

वैसे तो यह कहीं बार बनाया।

नहीं नहीं! एक भी बार नही बनाया

सच कहता हूँ।

क्यूँकि, हमने हर बार अनेक व्यक्तियों के घर, भोजन, कपडे, सुख और काम देखे है, वह भी अलग अलग तौर से, हाँ! अगर जो व्यक्ति ने सूची बना कर ही उनका ही घर, भोजन, कपडे, सुख और काम देखते तो शायद हम भी त्वरित जाग जाते - हाँ! मैं भी सूची बनाकर यही सूची के आधार पर मैं भी यही राह पर रहु, तो अवश्य हमारा भी घर, भोजन, कपडे, सुख और काम मेरा खुद का हो ही सकता है और मैं आनंद और शांति पा ही सकता हूँ।

" Vibrant Pushti "

" ॐ नमो: भगवते वासुदेवाय "

रेडियो से समाचार सुने

टीवी से समाचार सुने

चौराहे नुक्कड से समाचार सुने

बाजार दफतर से समाचार सुने

घर पधारे विशेषज्ञ से समाचार सुने

सुन सुन कर इतना सुना

समाचारों से सारे देशवासियों सुने

हर सुनवाई पर देश की संस्कृति सुनी

हर संस्कृति से यही सुना "तुम सुधर जाओ"

हर समाचार में दुष्कर्मता

हर समाचार में व्यभिचार

हर समाचार में पापाचार

हर समाचार में दुष्टाचार

हर समाचार में मिथ्याचार

हर समाचार में भ्रष्टाचार

हर समाचार में दूरव्यवहार

हर समाचार में दुराचार

हर समाचार में विषयाचार

हर समाचार में निराधार

हर समाचार में अत्याचार

एकेला बैठा

सोचने लगा

मैं कितना दुष्कर्मी हूँ,

कितने सालों से कथा सुनता हूँ

कितने सालों से शिक्षा पढता हूँ

कितने सालों से यही देशवासियों से रहता हूँ

कितने सालों से धर्म पारायण करता हूँ

कितने सालों से अध्ययन करता हूँ

कितने सालों से पूजा सेवा करता हूँ

कितने सालों से दान दक्षिणा देता हूँ

कितने सालों से मंत्र जाप करता हूँ

फिर भी मैं सुधरता ही नही

हे प्रभु! मैं ऐसी कैसी दुनिया में आया कि मैं ऐसा हूँ।

मुझमें कोई परिवर्तन लाने के लिए यह दुनिया के कोई व्यक्ति को मुझसे कोई दिक्षा ग्रहण करावो तो यह दुनिया में मैं जी पाऊ!

" Vibrant Pushti "

गरीबी कहां नही है?

हर देश में गरीबी है

हर समाज में गरीबी है

हर ज्ञाती में गरीबी है

हर जाति में गरीबी है

हर नासमझ में गरीबी है

हर अनजान में गरीबी है

हर अज्ञान में गरीबी है

हर अधर्म में गरीबी है

हर अंधश्रद्धा में गरीबी है

हर अभिमान में गरीबी है

हर धृष्टता में गरीबी है

हर कृतघ्ना में गरीबी है

हर घृणा में गरीबी है

हर फरेब में गरीबी है

हर नफरत में गरीबी है

हर रोग में गरीबी है

हर अयोग्यता में गरीबी है

हर छल में गरीबी है

हर दरिद्रता में गरीबी है

हर बुराई में गरीबी है

हर नीचता में गरीबी है

हर संताप में गरीबी है

हर दुःख में गरीबी है

हमें ही सोचना है

गरीबी कैसे मिटेगी?

कोई कितनी भी योजना बनाये!

कोई कितनी भी कोशिश करें!

गरीबी तो हमसे ही हटेगी और मिटेगी।

क्यूँकि वह तो हमने हमारी प्राथमिक वर्ण और वर्ग व्यवस्था से ही उदभवी है।

" Vibrant Pushti "

कितने डूबे है हम

कितने खोये है हम

कितने जुडे है हम

सारी साँसों से

सारी द्रष्टि से

सारी प्रकृति से

सारी सृष्टि से

सारी मति से

सारे मन से

सारे तन से

सारे धन से

सारे रोम से

सारे ज्ञान से

सारे भाव से

सारे कर्म से

सारे रंग से

सारे पुरुषार्थ से

सारे बाह्य तरंग से

सारे अंत:करण से

सारे तत्व से

सारे स्पर्श से

सारे अक्षर से

सारे आत्म से

सारे भव से

सारी घडी से

सारी जडी से

सारी जिज्ञासा से

सारी निधि से

सारी नीति से

सारी गति से

सारी दिशा से

सारी रज से

"श्री कृष्ण" से कि

हर कृति तो उनके लिए

हर वृत्ति तो उनके लिए

हर संस्कृति तो उनके लिए

हर पुष्टि तो उनके लिए

हाँ! " कृष्ण " " कृष्ण " " कृष्ण "

हाँ! पूर्व बंगाल में

हाँ! पश्चिम गुजरात में

हाँ! उत्तर कश्मीर में

हाँ! दक्षिण तमिलनाडू में

हर स्थली स्थली पर

हर मानव मानव पर

हर उत्सव उत्सव पर

हर धर्म धर्म पर

हर आनंद आनंद पर

केवल " कृष्ण " " कृष्ण " " कृष्ण "

हाँ! इतनी गहराई से डूबे है

हाँ! इतनी अधिराई से खोये है

हाँ! इतनी प्रीत से जुडे है

हे कृष्ण! हे कृष्ण! हे कृष्ण!

" Vibrant Pushti "

एक ऐसी बात कहता हूँ

शायद जीवन पलट जाय

हम हर बार संस्कार की बातें करते रहते है

हम हर बार धर्म की बातें करते रहते है

हम हर बार ऐसे सोचते रहते है की ऐसा क्यूँ? ऐसा नही, यह नही, वो नही। हम हमारी कुछ करने की जिज्ञासा खो देते है

हमारी द्रष्टि में जो कोई कुछ करे तो इनकी गलतियों पर या उनकी नासमझ पर ही ध्यान केंद्रित होता है। यह कैसे लक्षण हमारे

हम इतने सिमित है की हम यही कर सकते है आगे कुछ अध्ययन या कुछ सकारात्मक करने की हिम्मत नही जोड पाते है। क्यूँ?

क्यूँकि हम ज्यादा नकारात्मक है, अधिरे है, अधूरे है, आलसी है।

हम ऐसे है जो जानते है कि यह मुझे परेशान करेगा, हैरान हूंगा तो भी हम वही करते है जो हमें नुकसान पहुंचाये। इसलिए तो हम ज्यादा रोगी रहते है।

हम ऐसी ऐसी मान्यता से बंधे है जो दूसरे बांधते है और खुद करते है। कितनी नाइंसाफी है हमारे जीवनकी, जो न किसीसे संबंध बांधते है न किसीसे रिश्ता जोडते है।

अकेले! अकेले और अकेले।

हम सदा पुराने शास्त्रों से ही लगाव रखते रहते है, हर बार उन्हीं की बातें, कथायें, चर्चाएं, दर्शाते, उपयोग करते है पर कभी उनमें से वैज्ञानिक सिद्धांत नही जानते है बस एक गाय के बछेरे की तरह उनके आसपास घुमते रहते है। कैसी अंधश्रद्धा!

आज हम यही समझ की उम्र पर तो है ही कि हम योग्यता को समझ सके, कर सके और पा सके।

जिन्हें जो समझना हो

जिन्हें जो करना हो

जिन्हें जो चलना हो

वो वही ही जाने

हम तो खुद अपनी आंखें खोल ही सकते है। ऐसा करने का हमें पुरा हक है और स्वतंत्र भी है।

हाँ! तब ही हम अपने आप से खुश रहेंगे, कुछ करेंगे, साथ साथ आनंद पायेंगे।

" Vibrant Pushti "

" जय जय श्री राधे "

विश्वास है ऐसा अपनी अंदर

जब श्री प्रभु का दर्शन करते है तब नैनन में चमक की ज्योति प्रकटती है

क्यूँ ज्योति प्रकटती है?

आप ही अपने आप को कहना

जब श्री प्रभु को दर्शन करते हमारे नैनन से उनके तिरछे नैन मिलाते है तो अधर काँपते है

क्यूँ अधर काँपते है?

आप ही अपने आप को कहना

जब श्री प्रभु को आंतर तन मन और ह्रदयस्थ से दर्शन करते है तो साँसों में उर्जा उठती है

क्यूँ उर्जा उठती है?

आप ही अपने आप को कहना

जब श्री प्रभु को दंडवत प्रणाम से दर्शन करते है तो रोम रोम में स्पंदन जागते है

क्यूँ स्पंदन जागते है?

आप ही अपने आप को कहना

जब श्री प्रभु की स्मरण परिक्रमा दर्शन करते है तो अपने पैर की ऊंगलियों में ठंडक सी छाती है

क्यूँ ठंडक सी छाती है?

आप ही अपने आप को कहना

जब श्री प्रभु का दर्शन का प्रसाद ग्रहण करते है अपने तन मन और धन में पवित्रता का संचार होता है

क्यूँ पवित्रता का संचार होता है?

आप ही अपने आप को ही कहना

हाँ! अगर नही ही होता हो तो कोशिश अवश्य करना

भक्त स्मरण का विश्वास है कोई तो अनुभूति अवश्य होगी।

" Vibrant Pushti "

" कृष्ण " साधन

" यमुना " साधन

" गिरिराज " साधन

" वल्लभ " साधन

" विठ्ठल " साधन

" अष्टसखा " साधन

" पुष्टि मार्ग " साधन

सच! हमने जन्म पाया ऐसे मातपिता से

सच! हमने संस्कार पाया ऐसे कुटुंब से

सच! हमने शिक्षा धरी ऐसे समाज से

सच! हमने काम सीखा ऐसे संसार से

सच! हमने धर्म धरा ऐसे बोधपाठीओ से

" कृष्ण " का कर्म का सिद्धांत नही पहचाना

" यमुना " का कृपा जलधि संश्रिते नही समझा

" गिरिराज " का स्थितिप्रज्ञता नही स्पर्शा

" वल्लभ " का सुबोधन नही जगाया

" विठ्ठल " का सेव्य प्रकार नही संवारा

" अष्टसखा " का वैष्णवता नही भक्ताया

" पुष्टि मार्ग " का पथ नही शरणाया

हमने आजतक का सारा जीवन केवल व्यवहार से ही गुजारा है - हर तरह से अर्थोपार्जन में ही लुटा

" Vibrant Pushti "

" श्री गोवर्धन नाथजी की जय "

कृष्ण कृष्ण को सोप दिया

तो कृष्ण कृष्ण से आँख मिचौली क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से जोड दिया

तो कृष्ण कृष्ण से अधुरप क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से रंग दिया

तो कृष्ण कृष्ण से द्विरंग क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से वरण किया

तो कृष्ण कृष्ण से छल क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से अंश पाया

तो कृष्ण कृष्ण से रसहीन क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से धर्म संस्थापाया

तो कृष्ण कृष्ण से अधर्म क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से प्रीत जताई

तो कृष्ण कृष्ण से बेवफाई क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से रास रचाई

तो कृष्ण कृष्ण से अवैधता क्यूँ?

हे परब्रह्म! आपने मुझे जो भी जन्म - जीवन - संस्कार - संसार - सृष्टि - प्रकृति और ऋणात्मक संबंध दिये है वह निभाते निभाते पुरुषार्थ अविरत क्षण क्षण करता रहता हूँ, पर कभी कभी ऐसा विचार भी जागता है - यह कैसा जीवन?

साथ साथ ऐसा भी विचार जागता है - हे कृष्ण! तुम्हें भी ऐसा होता ही होगा तो तु कैसे धीरज और संयम रखता है तो मैं भी शांत हो जाता हूँ।

हे कृष्ण! क्या ऐसा ही जीवन है?

हर अंश ऐसे ही!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

"संबंध" किसे कहते है?

पता है आपको? - पता है?

आज हम सब किस किस संबंध से जी रहे है, पता है न!

माता पिता से कोई कुछ नही कह पाते

पति पत्नी से नही कुछ कह पाते

पत्नी पति से नही कुछ कह पाती

माता पुत्र - पुत्री से नही कुछ कह पाती

पिता पुत्र - पुत्री से नही कुछ कह पाते

पुत्र - पुत्री माता पिता से कुछ कह नही पाते

माता पिता बहु को कुछ नही कह पाते

बहु माता पिता को कुछ कह नही पाती

यह तो सिर्फ कुटुंब के संबंध से जुडे है उनकी ही बात है

जो कुटुंब के संबंध से नही है उनकी बात तो हम सोचते भी नही है और करते भी नही है।

कैसी हालत है जीवन की!

यही बात से ही श्री वल्लभाचार्यजी ने जो "ब्रह्मसंबंध" का जो सिद्धांत जताया है - दर्शाया है, इसके उपर चिंतन करना अति आवश्यक है।

क्यूँकि जो भी दिक्षा हम जिससे भी ग्रहण करते है, यह "ब्रह्मसंबंध" का सिद्धांत समझना आवश्यक है।

"ब्रह्मसंबंध" का जो भी सूत्र और सत्य शिक्षित योग्यता है यह भी एक कुटुंब के माहात्म्य से ही जुडी है।

अति गहराई से अध्ययन आवश्यक है। जो समझ गया उन्होंने "ब्रह्मसंबंध" का सामर्थ्य पा लिया और श्री वल्लभाचार्यजी के शरण का स्पर्श उन्होंने पा लिया।

" Vibrant Pushti "

" श्री वल्लभाधीश की जय "

आज श्री माताजी के दर्शन करने पहुंचा, मन में एक बात उठी

हमारी संस्कृति में

जो भी माताजी है हर माताजी नारी स्वरुप में है। हम बार बार उनकी पूजा अर्चना करते है।

शायद ऐसा भी है कि

1. चोर - डाकुओं भी श्री माताजी को ही मानते है

2. कूट्टणखाना चलाने वाले भी श्री माताजी को ही मानते है

3. दारु - जुगार के अड्डे वाले भी श्री माताजी को मानते है

4. भ्रष्टाचारी भी श्री माताजी को मानते है

5. कहीं न कहीं प्रकार से एक दूसरे को ठगने वाले भी श्री माताजी को मानते है

6. धर्म और मजहब वाले भी श्री माताजी को मानते है

7. भीख मांगने वाले भी माताजी को मानते है

8. जो कुछ नही करता है वह भी श्री माताजी को मानते है

9. गरीब - तवंगर भी श्री माताजी को मानते है

10. नेता भी श्री माताजी को मानते है

11. सुखी संपन्न भी श्री माताजी को मानते है

सोचने लगा - ओहहह! सब लोग श्री माताजी को मानते है - अर्थात नारी को - जो हमारी संस्कृति की एक धरोहर है।

ऐसी कैसी विचारधारा और आचरता की हम नारी का ही सन्मान न करें और निम्नता और नीचता के लिए उपयोग और उपभोग करें!

क्या हमारी भी "माँ" "बहन" "पत्नी" "पुत्री" है जो किसी ओर की भी है, तो ऐसी अधमता कैसी?

हमारे देश में इतनी कटुता - अधर्मता - अघटितता - अपराधता कैसी!

क्या हम इतने निर्बल है?

क्या हम इतने दुराचारी है?

क्या हम इतने अभद्र है?

क्या हम इतने निष्ठुर है?

क्या हम इतने कामी और क्रोधी है?

हम श्री राम को पूजते है

हम इश्वर अल्लाह को एक मानते है

इनके समाज और देश की ऐसी दुर्दशा!

और हम बार बार पूजते है श्री माताजी को - नारीत्व को!

प्रतिज्ञा करो - विजयादशमी के ऐसे शुभ दिन से - जो हमारी संस्कृति है -

"नारी सन्मानता"

"सदा रहेंगे रक्षक नारीत्व का"

" Vibrant Pushti "

"आप का मुखडा देखा

बहुत ही सुंदर है

इन्हें कभी किसी पर

नजर नही रखवाना

नही तो संसार

असार हो जायेगा"

यह हर एक व्यक्ति को छूता है

शायद यही ही असर से जगत कितना रोगी और भोगी है।

हर एक मनुष्य कैसे कैसे तर्क वितर्क करते है - कहीं सिद्धांतों को डूबो दिया - खो दिया - तोड दिया।

यही ही तर्क और वितर्क में एक ही संस्कृति है जो हमें स्वस्थ, सुखी और आनंदमय कर सकती है और वह संस्कृति है - "आध्यात्म" जो हमें सदा सुरक्षित और जागृत रखती है।

न मोह - न माया - न काया

रख दे तन मन धन से तमाम

न क्रोध - न काम - न अभिमान

रख दे ज्ञान भाव धर्म से तमाम

न घृणा - न तृष्णा - न अपूर्णता

रख दे कर्म पुरुषार्थ भक्ति से तमाम

यही ही अंश है

यही ही ब्रह्म है

यही ही सत्य है

" Vibrant Pushti "

" जय जय श्री वल्लभ "

हमारे देश उपर कहीं सत्ता ने राज किया। कितने इतिहास के पन्ने पलट गये। जब भी कोई भी बाहर का धर्म आक्रमण हुआ पर न हम डगे और हमारी संस्कृति डगी।

आज भी हम श्री राम को पूजते है और श्री कृष्ण के चरित्र सिद्धांतों से जीते है।

वही वेद - उपनिषदों - गीता - भागवत - रामायण।

क्यूँ?

क्यूँकि यह सर्वे से ही हमारी सृष्टि है - प्रकृति है - पुष्टि है।

क्यूँकि यही ही हमारी धरती है - आकाश है - अग्नि है - वायु है और जल है।

क्यूँकि यही से ही हमारे आचार्यो - शंकराचार्य - रामानुजाचार्य - माधवाचार्य - निम्काचार्य - वल्लभाचार्य ने सनातन धर्म ज्योत प्रक्टायी जो जन्म जीवन - आत्म परमात्मा का सच्चिदानंद स्वरूप का अनुभव करवाया।

तो हम! आज यही धूरा को क्यूँ समझ नही पाते, संभल नही पाते, रक्षण नही कर पाते, खुद को सार्थक नही कर पाते।

सोचो! जो जो भी व्यक्ति की उम्र 45 (पैंतालिस) से उपर है वह क्या चिंतन करके कुछ समझ नही सकते? कुछ उजागर नही कर सकते? कुछ परिवर्तन नही कर सकते?

क्या हम इतने निर्बल है?

क्या हम इतने लाचार है?

क्या हम इतने आधारित है?

क्या हम इतने मजबूर है?

क्या हम इतने द्रष्टि हीन है?

क्या हम इतने डरपोक है?

क्या हम इतने मायावादी है?

क्या हम इतने तर्कसंगत है?

क्या हम इतने आडंबर है?

हम क्या कहेंगे!

हमारा मन, तन, धन और आत्मा ही कहता है - हाँ!

जागना तो है ही।

तब भी तो मानव से मनुष्य

मनुष्य से आत्मधारी

आत्मधारी से धर्मधारी

धर्मधारी से पुरुषार्थधारी

पुरुषार्थधारी से सत्यधारी

सत्यधारी से सगुणधारी

सगुणधारी से भक्तिधारी

भक्तिधारी से देवधारी

देवधारी से परमात्माधारी

परमात्माधारी से परब्रह्मधारी

" Vibrant Pushti "

हमारा मन एक हो सकता है

पर हम जिसके साथ और पास रहते है उनका और हमारा मन शायद एक हो सकता है।

अगर यह बात अति सूक्ष्मता से और गहराई से सोचे तो हम भी किसीका साथी और किसीके पास रहते है तो हमारा मन भी एक किसीके लिए नही हो सकता है।

अर्थात मन अलग

तो विचार अलग

तो अर्थ अलग

तो समझ अलग

तो क्रिया अलग

तो रीत अलग

तो नियम अलग

तो रंग अलग

तो भाव अलग

तो स्वभाव अलग

तो राग अलग

तो धारणा अलग

तो सूर अलग

तो मार्ग अलग

तो सूचन अलग

तो शिक्षा अलग

तो ध्यान अलग

तो डग अलग

तो ध्येय अलग

तो व्यवहार अलग

तो व्यवसाय अलग

तो व्यवस्था अलग

तो क्षमता अलग

तो ज्ञान अलग

तो विज्ञान अलग

तो रमत अलग

तो भूख अलग

तो अर्चन अलग

तो भूमि अलग

तो द्रष्टि अलग

तो सृष्टि अलग

तो प्रकृति अलग

तो वृत्ति अलग

तो कृत्य अलग

तो वृद्धि अलग

तो स्पर्श अलग

तो समृद्धि अलग

तो संस्कृति अलग

तो जन्म अलग

तो जीवन अलग

बहुत कुछ अलग..........

ओहह! तो तो अलग अलग और अलग

यही अलगता ही विभिन्नता है

यही अलगता ही विघटनता है

यही अलगता ही विखुटता है

यही अलगता ही विषमता है

यही अलगता ही विशालता है

यही अलगता ही विकासता है

यही अलगता ही विपरीतता है

यही अलगता ही परिपक्वता है

यही अलगता ही साधारणता है

यही अलगता ही सामान्यता है

यही अलगता ही सार्थकता है

यही अलगता ही कार्यशक्ति है

यही अलगता ही कार्यदक्षता है

यही अलगता ही मुख्यता है

यही अलगता ही उच्चता है

यही अलगता ही शासनता है

यही अलग अलगता में ही हमें जीना है - संवरना है - संभलना है - जाना है और पाना है।

जिसने ज्यादा मन जोड लिया

जिसने ज्यादा मन एक कर लिया

वह गुरु है

वह आचार्य है

वह वैज्ञानिक है

वह भगवान है

जो न मन जोड पाया

जो न मन एक कर पाया

वह .... सोचलो?

" Vibrant Pushti "

"तुलना" "Comparison"

द्रष्टि से

मन से

विचार से

क्रिया से

रीत से

वचन से

शब्दों से

स्वर से

प्राप्तता से

सिद्धांत से

सिद्धि से

आर्थिकता से

भौतिकता से

आध्यात्म से

कर्म से

धर्म से

सुख से

दु:ख से

ज्ञान से

भक्ति से

शास्त्र से

शासन से

अनुभव से

गुणवत्ता से

और कहीं रंग तरंग से

और कहीं स्पर्श से

और कहीं बंधन से

और कहीं संबंध से

क्या हमें जन्म से ऐसा है?

क्या हमें कुटुंब से ऐसा है?

क्या हमें शिक्षा से ऐसा है?

क्या हमें जीवन पद्धति से ऐसा है?

क्या हमें ऐसा ही करते करते जीवन की पूर्णता पाना है?

उठते जागते-सोते संवरते

बस - तुलना तुलना और तुलना

क्या हमें हम पर विश्वास नही है?

क्या हमारे सिद्धांतों पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारे संस्कारों पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी शिक्षा पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारा मन तन और धन पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी जिज्ञासा पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी शक्ति पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी काबिलियत पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारा कर्म पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारा धर्म पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी जीवन पद्धति पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारे संबंध पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी नीति पर विश्वास नही है?

अगर नही ही है तो तुलनात्मक जीवन से तो हम ऐसा ही होंगे और रहेंगे

जैसे किसीके सहारे

जैसे किसीके भरोसे

जैसे किसीके आधारित

जैसे किसीके लाचार

जैसे किसीके भार

जैसे किसीके मार

जैसे किसीके नादार

जैसे किसीके डर

जैसे किसीके चर

जैसे किसीके नजर

ओहह! तुलना तुलना तुलना

सोचों! हम यही है!

" Vibrant Pushti "

हम हिन्दुस्थानी ने

श्रीराम का सिद्धांत पाया है

श्रीकृष्ण का पुरुषार्थ पाया है

श्रीशंकर का धर्म पाया है

श्रीबुद्ध का ज्ञान पाया है

श्रीमहावीर का ध्यान पाया है

श्रीकाली का शोर्य पाया है

श्रीगुरुनानक का त्याग पाया है

श्रीअल्लाह का याचना पाया है

श्रीजरथुष्ट का जुडना पाया है

श्रीईसाई का शांतता पाया है

ऐसे हिन्दुस्थानी जो मिलझुल के बसे - एकता से रहे - साथ साथ कार्य करे - हर रिश्ते से उत्सव मनाये।

उन्हें कैसे कैसे और कहां कहां से आते है कोई आतंकवादी - कोई नेता के रूप में

कोई मजहब के आधार में

कोई परदेश के अधर्मता में

कोई अमानवीय नरभक्षी में

कोई आधुनिक सत्ता लोभी में

तो ऐक यज्ञता से और पुरुषार्थ से एकजुट होकर कहते है

न कोई हमें मिटा सकता है

न कोई हमें तोड सकते है

न कोई हमें हरा सकते है

न कोई हमें डरा सकते है

क्यूँकि

हम ही राम है

हम ही कृष्ण है

हम ही शंकर है

हम ही बुद्ध है

हम ही महावीर है

हम ही काली है

हम ही गुरुनानक है

हम ही अल्लाह है

हम ही जरथुष्ट है

हम ही ईसाई है

" Vibrant Pushti "

जा रहे थे कहीं दूर अकेले

मुझसा न साथ कोई चलते

तन कहे मैं अकेला

पर

मन कहे कैसे मैं अकेला?

इनकी यादें उनके वादे कहीं इरादे

कहां कहां से जुडेला

कैसे मैं अकेला

नैन कहे कैसे मैं अकेला

इनके सपने उनकी तसवीरें कहीं अफसाने

कहां कहां से लिपटेला

कैसे मैं अकेला

आत्म कहे मैं अकेला

धडकन कहे मैं अकेला

साँस कहे मैं अकेला

चलते चलते सभी को साथ लेते

मन दौडे तो सब दौडे

नैन दौडे तो सब दौडे

दौड दौड में मन थके

दौड दौड में नैन थके

दौड दौड के तन थके

पर

न थके आत्म मेरा

न थके धडकन मेरी

न थके साँसें मेरी

पता चला खुद को खुद से

सच्चे साथी है आत्म धडकन साँसे

खुद को जगाया खुद को जताया

साँस संवारी तो तन मन नैन संवारा

धडकन गूँजाई तो तन मन नैन मधुरा

आत्म सिंचाई तो तन मन नैन प्रज्वल्लाई

ओहह! सच्चे साथी सच्चे पुरुषार्थी

जो समझ गया वो संसार जीताई - जीवन सिद्धाई

जीव जगत का यही है सत्य

आत्म ब्रह्मांड का यही है साध्य

" Vibrant Pushti "

मैं खेलता रहा आत्मा की आवाजें से
मैं खेलता रहा जीवन की गुमराहों से
मैं खेलता रहा तर्क की धृष्टता से
मैं खेलता रहा वचनों की जूठी भरमारों से
मैं खेलता रहा क्षमा की आलोचनाओं से
मैं खेलता रहा तन के रोगों से
मैं खेलता रहा सिद्धांतों की द्विअर्थी से
मैं खेलता रहा नजरों की दुष्टता से
मैं खेलता रहा मन के विकारों से
मैं खेलता रहा विश्वास की जुठ्ठाईओ से
मैं खेलता रहा धन के व्यवहारों से
मैं खेलता रहा संबंध की लागणीओ से
मैं खेलता रहा धर्म के आडंबरो से
मैं खेलता रहा सच्चाई की दुहाई से
मैं खेलता रहा वडीलों के आशीर्वादो से
मैं खेलता रहा कौटुंबिक आकांक्षाओं से
मैं खेलता रहा भाई की तरक्की से
मैं खेलता रहा बहन की रक्षा से
मैं खेलता रहा दोस्त की वफादारी से
मैं खेलता रहा समाज के रिश्तों से
मैं खेलता रहा मातपिता की कृपा से
सच में क्या मैं आज ऐसा जी रहा हूँ?
" Vibrant Pushti "

कितनी महान है भूमि

कितनी विशुद्ध है भूमि

कितनी पवित्र है भूमि

कितनी श्रद्धेय है भूमि

कितनी पौरुषेय है भूमि

कितनी सिद्धांतीय है भूमि

कितनी तपस्वी है भूमि

कितनी ज्ञानीय है भूमि

कितनी भक्तिय है भूमि

कितनी कर्मिय है भूमि

कितनी जागतीय है भूमि

कितनी सृजनीय है भूमि

कितनी सर्जनीय है भूमि

कितनी सार्थकीय है भूमि

कितनी आदरणीय है भूमि

कितनी सन्मानीय है भूमि

कितनी विश्वसनीय है भूमि

कितनी सरल है भूमि

कितनी सात्विक है भूमि

कितनी आस्तिक है भूमि

कितनी प्राकृतिक है भूमि

कितनी दयामय है भूमि

कितनी नैतिक है भूमि

कितनी धार्मिक है भूमि

कितनी सिद्धेय है भूमि

कितनी न्यायिक है भूमि

कितनी भाविक है भूमि

कितनी दार्शनिक है भूमि

कितनी वैज्ञानिक है भूमि

कितनी अलौकिक है भूमि

कितनी आत्मीय है भूमि

कितनी प्रीतमय है भूमि

कितनी रंगीनिय है भूमि

कितनी संगीतय है भूमि

कितनी अभिन्न है भूमि

कितनी संस्कृत है भूमि

कितनी क्षमाशील है भूमि

कितनी सुशील है भूमि

कितनी वचनीय है भूमि

कितनी निर्भय है भूमि

कितनी एकात्मीय है भूमि

कितनी पुरुषार्थी है भूमि

कितनी अद्भुत है भूमि

कितनी अद्वैत है भूमि

हम कितने भाग्यशाली है की हमने ऐसी भूमि पर जन्म धारण किया है जो जन्मभूमि इतनी याज्ञिय है। जो हर तत्व ज्ञान - तत्वभाव से पूर्ण है।

तो हमें भी यही भूमि को यही सर्वोत्तमता से - सर्वोच्चता से - सर्वाधिकता से जो करना है वह हमें जगाना है

- वह हमें धरना है

- वह हमें प्रबलना है

- वह हमें कृतज्ञना है

- वह हमें सिंचना है

- वह हमें सुरक्षना है

- वह हमें संवरना है

- वह हमें संभलना है

- वह हमें निभाना है।

अपने अस्तित्व की योग्यता को सार्थक करने यह नूतनवर्ष को अतूट संकल्प करें। यह हमारी ही भूमि है।

" Vibrant Pushti "

"सत्यता" को हम

-तोडते रहते है

-घमरोळते रहते है

-आँख मिचौली खेलते रहते है

-दूर करते रहते है

-तरछोडते रहते है

-नकारते रहते है

-घुमाते रहते है

-गंवाते रहते है

-खोते रहते है

-डराते रहते है

-खेलते रहते है

-भरमाते रहते है

-भागते रहते है

-तिरस्कृत करते रहते है

-अपमान करते रहते है

-असमंजस में फसाते रहते है

-नपुंसक करते है

-पहचानने से इनकार करते है

-आडंबर से अलंकृत करते है

-समझसे परे करते रहते है

-चूपकिदी सांधते है

-निम्नता से धज्जियां उडाते है

-मजबूर करते है

-दोषी ठहराते है

-तर्क वितर्क से नेस्तनाबूद करते है

-असत्य करार देते है

-नासमझ भाव से त्याग देते है

-भ्रमणा में निरुपीत कर देते है

-कहीं प्रकार के प्रमाणों में धकेल देते है

-अविश्वसनीयता में डूबो देते है

-कहीं माध्यमों से नजरअंदाज करते रहते है।

ओहह! कैसे है हम?

इतनी शिक्षा पायी

इतने धर्म धरे

इतने शास्त्र उथामे

इतनी चर्चा पायी

इतने चिंतन साधा

इतने सत्संग कराये

इतनी साधना पायी

इतनी तपश्चर्या धरी

इतनी धर्म स्थली बंधाई

इतने अनुष्ठान किये

इतने पारायण किया

इतनी धर्मसभा आयोजि

इतने अनुयायी घडे

इतनी ज्ञानस्थ भूमिका निभाई

इतने धर्म सूत्रों का गहराई से अध्ययन किया

इतने संकल्प किये

हाँ! जो जो अनुभव पाया वही अनुभवों से जो सकारात्मक परिणाम पाया उन्हें विशालता से व्याप करते जाये तो " सत्यता " का सूरज उगा सकते है।

यही ही फर्ज है - यही ही पुरुषार्थ है हमारी योग्यता का - यही ही शुद्‌धता है हमारी जिंदगी का।

" Vibrant Pushti "

हमने हमारी विशुद्धता पहचाननी है
हमें हमारी पवित्रता पहचाननी है
हमें हमारी साक्षरता पहचाननी है
हमें हमारी श्रेष्ठता पहचाननी है
हमें हमारी योग्यता पहचाननी है
हमें हमारी धर्मता पहचाननी है
हमें हमारी संस्कृतता पहचाननी है
हमें हमारी शिष्टता पहचाननी है
हमें हमारी निष्ठता पहचाननी है
हमें हमारी वैष्णवता पहचाननी है
हमें हमारी कर्तव्यता पहचाननी है
यह पहचानने के लिए हमें जन्म जीवन - तन मन और धरती पुरुषार्थ करने के लिए प्रदान किए है।
इसमें न कोई कौटुंबिक भूमिका है
इसमें न जाति की वर्ण व्यवस्था है
इसमें न वंश की परंपरागत है
इसमें न आर्थिक और बौधिक साथ है
इसमें न धर्मधारी आचार्य प्रणाली है
यही सत्य है
यही अंश की सार्थकता है
यही अंशी की सर्जनता है
यही जगत की प्रमुखता है
यही ब्रह्मांड की प्रज्ञानता है
" Vibrant Pushti "

धनवान" "तवंगर"

क्या मैं धनवान हूँ?

क्या मैं तवंगर हूँ?

क्या हम धनवान है?

क्या हम तवंगर है?

कैसे?

नही नही

सोच लो!

गहराई से सोच लो!

अध्ययन से सोच लो!

पैसा से सोच लो!

आभूषणों से सोच लो!

जर जोरु जमीन मिलकत से सोच लो!

हर रिश्ते नाते से सोच लो!

हर आर्थिक अर्थोपार्जन से सोच लो!

धर्म से सोच लो!

नेतागिरी से सोच लो!

हमारे पास जो है उनसे

अपने जीव और जीवन को तंदुरुस्त और विशुद्ध पवित्र कर सकते है?

हमारे पास जो है उनसे अपने जीव को और आत्म को परमात्मा में एकात्म कर सकते है?

नही

चाहे धर्मगुरु हो

चाहे धर्म शास्त्री हो

चाहे धर्म ज्ञानी हो

चाहे वैज्ञानिक हो

चाहे अनुस्नातक हो

चाहे राष्ट्र नेता हो

तो धनवान कैसे?

तो तवंगर कैसे?

क्यूँकि यही जीव जीवन जगत का कहीं न कहीं प्रकार से त्याग करना ही है अर्थात छोडना है या छूटाना है।

चाहे दुनिया का सबसे धनवान या तवंगर क्यूँ न मानते हो!

हम सब कहते है

यह तो चक्र है

यह तो विज्ञान है

यह तो नियति है

नही नही

आप अपनी जिज्ञासा से सोच लो!

" Vibrant Pushti "

दिपावली की तिथि

"ग्यारहसी"

"द्वादशी"

"तेरहसी"

"चौदहसी"

"अमावस्या"

क्या क्या कह रही है?

ग्यारहसी - ग्यार अर्थात 1 दशक 1 = 11

1 अर्थात मैं

1 अर्थात आप

मैं और आप से जुडने से ही ग्यारहसी होती है - जिससे मेरा तन मन धन और आपका तन मन धन विशुद्ध होता है।

द्वादशी - द्वाद अर्थात 1 दशक 2 = 12

1 अर्थात मैं

2 अर्थात द्वि अर्थात आप और समाज

मैं और आप और समाज जुड जाये तो द्वादशी होती है - जिससे मेरा आंतरिक मन - सूक्ष्म तन - संस्कृत धन (बुद्धि) और आपका आंतरिक मन - सूक्ष्म तन - संस्कृत धन और समाज की मान्यता से समाज का आंतरिक मन - सूक्ष्म तन - संस्कृत धन से जुडने से जो नीति घडते है, जो नीति से संस्कार पद्धति शिक्षित होती है जो मैं - आप - समाज को सदा विशुद्ध करता है।

तेरहसी - तेरह अर्थात 1 दशक 3 = 13

1 अर्थात मैं

3 अर्थात आप + समाज + संस्कार

मैं और आप और समाज और संस्कार जुड जाये तो तेरहसी होती है।

जिससे मेरा स्थितिप्रज्ञ मन - विशुद्ध तन - साक्षर धन - धारण नीति की पवित्रता आपके स्थितिप्रज्ञ मन - विशुद्ध तन - साक्षर धन - धारण नीति की पवित्रता और समाज का स्थितिप्रज्ञ मन - विशुद्ध तन - साक्षर धन और धारण नीति और संस्कार का आंतरिक मन - विशुद्ध तन - साक्षर धन और धारण नीति जुड जाये तो तेरहसी से जीवन संस्कृत होता है।

चौदहसी - चौदह अर्थात 1 दशक 4 = 14

1 अर्थात मैं

4 अर्थात संस्कार धारण मन - अति विशुद्ध तन - योग्य साक्षर धन - असाधारण धारण नीति और संस्कार की जीवन संस्कृति जुड जाये तो भक्ति का पार्दूभाव होता है। जिससे जन्म जीवन का अंधकार नष्ट होता है।

और

अमावस्या - जो हर अंधकार और अज्ञान को भक्ति की दिपावली से भस्मीभूत कर देते है और हर तरह से हर ओर दीपक का पूंज तेजोमय हो कर सारे ब्रह्मांड को सूरज की किरणों से भर देता है।

यही ही दीपावली का माहात्म्य है।

" Vibrant Pushti "

दीपावली आ रही है साथ साथ नूतन वर्ष भी आ रहा है।

दीपावली हमारी संस्कृति का निराला और आत्मीय सन्मान और जागृतता का उत्सव है।

आजकल हम अधिक समझते है की नया साल आ रहा है और जो गुजर रहा है जो साल उनमें कोई भूल - कोई दु:खद घटना - कोई असमंजस - कोई वचन और सन्मान भंग क्रिया से किसीका मन - आत्म - स्वभाव - संस्कार और संबंध से तरछोडा गया हो तो उनके लिए माफी का पर्व!

नही नही

यह समझ गलत और नासमझ भरी है, जो मान्यता माने - जो रिवाज माने - जो एक निम्न भाव से अपने को माफी मांगने का हकदार समझे।

ऐसा नही होना चाहिए और करना चाहिए। क्यूँकि दीपावली तो हमारे जीवन की सांस्कृतिक धार्मिक और आध्यात्मिक आनंद उमंग की श्रेष्ठ विशिष्टता है जो पूरा वर्ष हमने जो जो उद्यम किया - जो जो मन - धर्म - आत्म - तन - विज्ञान और बुद्धि धन की जागृतता पायी उन्हें सार्वभौमत्व करके जीवन सार्थक किया उनका आनंद उल्लास प्रस्थापित करने का त्योहार है।

हाँ! किसीसे कोई व्यवहार - स्वार्थी - अन्यायी - मार्मिक - धार्मिक - कार्मिक अविश्वसनीय - असमंजस भूल हो गई हो और यह भूल के लिए प्रश्च्यात‌ाप करता हो और फिरसे न भूल करने की प्रतिज्ञा करता हो तो माफ करना योग्य आवश्यक है। पर यह यही आनंद उत्सवों के पर्व में नही करना चाहिए यह तो उसी समय ही करना चाहिए जब भूल का एहसास समझ आ गया हो।

यह तो आनंदोत्सव से भरा जिसमें रंग - उमंग - उत्तम आभूषणों और वस्त्रों का परिधान, मन में शुद्धता - तन में पवित्रता - धन में न्योछावरता - आत्म में साक्षरता हो तो चारों ओर दीप ही दीप - तेज ही तेज - प्रकाश पूंज ही पूंज - जिसमें नष्ट हो गया हो हमारा अहंकार - अभिमान - द्वेष - काम - क्रोध - माया - मोह - लोभ - आदि दुष्टता - अज्ञान।

यही ही है हमारी मनुष्य - संस्कार - विज्ञान - साक्षरता की पहचान।

" Vibrant Pushti "

ज्योत प्रज्वलाये दीप प्रकटाये

मन मन आनंद उमंग जगाये

तन तन हेत उल्लाहस बढाये

धन धन हर्ष सुहास धराये

घट घट मंगल

पट पट शुभम्

तट तट रंगम्

दीप दीप से हममें संस्कृति

रंगोली रंग से हममें प्रकृति

फूल फूलों से हममें मधुरी

धान धान्य से हममें दात्री

हममें रहो हे दीपावली

हममें रहो हे श्री सरस्वती जी

हममें रहो हे श्री लक्ष्मी जी

हममें रहो हे श्री रुप श्रृंगार जी

हममें रहो हे श्री नित्या जी

" Vibrant Pushti "

आइ है दिवाली हमारे द्वार

नये सूरज लेके साथ

खीलेंगे किरणें नये बहार

नये स्वपने जगाये हमार

टिमटिमाये दीप प्रज्वले

रंग बिरंगी रंगोली झगमगे

है आया प्यारा नव त्योहार

हमारे आँगन हमारे द्वार

ढम ढमा ढम मृदंग बाजे

छम छमा छम पायल नाचें

है आया हर्षोल्लास खुमार

हमारे आँगन हमारे द्वार

नीला पीला जोडा पहना

रंगों की बौछार उडाया

सजाये दीपोंका शृंगार

हमारे आँगन हमारे द्वार

पकाये घुघरा मठीया मीठा अमाप

खिलाये घर घर अपार

झूमे मिले रिश्तों का प्यार

हमारे आँगन हमारे द्वार

आप पधारे साथ दीप प्रकटाये

अरस परस आनंद लुटाये

जागे संस्कृति का त्योहार

हमारे आँगन हमारे द्वार

शुभ दीपावली शुभ जगावली

शुभ दीपावली शुभ करावली

शुभ दीपावली शुभ मिलावली

शुभ दीपावली शुभ आनंदावली

" Vibrant Pushti "

सर्वबाधानिरासेन

रामोऽयोध्यतया स्थित: ।

यत्राधर्मतमोहन्त्री

दीपावल्युत्सवायिता ।।

सा सर्वाशुभनाशिका

स्वधर्मोज्वलकारिणी

समेषां भारतीयांना

शर्मदा सर्वदा भवेत ।।

"दीपावली"

हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति आधारित

यह सूत्र दीपावली क्या है?

हम हर वर्ष यह त्योहार को क्यूँ उजागर करते है?

हम दीपावली पर्व मनाते नही है पर हमारी अंदर उजागर करना है।

दीपावली क्या है?

दीप से दीप प्रज्वलित करना

दीप से दीप हमारा अधर्म का नाश

प्रभु श्रीराम जब अधर्म को नष्ट करके जब अयोध्या पधारे तब हमारे मन में हमारे तन में हमारी क्रिया में जो अनिष्ठा - अज्ञान - अधर्म था, उन्हें यह दीप प्राकट्य से उनको नष्ट किया और हमें विशुद्ध पवित्र और ज्ञानवर्धक बनाया। तब ही तो राम राज्य की स्थापना हुई।

बस! यही दीपक यही तिथि से प्रस्थापित हो गया और तबसे हम दीपावली उत्स करते है अर्थात उजागर करते है।

न कोई भेद न कोई भरम

न कोई उच्च न कोई निच

न कोई तवंगर न कोई गरीब

न कोई बैर न कोई गैर

सब है एक समान

यही संस्कार के साथ हम जुडते आये और यही ही नीति से हम इसका पालन करते है।

यही ही दीपावली है।

यही ही नूतन वर्ष है।

" Vibrant Pushti "

अमावस्या की दीपावली रात्रि ने धरती पर दीप मालाएं प्रज्वलित कर

सारा अंधकार - अंधश्रद्धा - असमंजस - अज्ञान - अधर्म को नष्ट किया

ऐसे ही आकाश ने तारें टिमटिमा कर सारे जहाँ को झगमग कर दिया

यही दीप मालाएं और यही तारें की आहवान से एक नूतन सवेरा को जगाया - नूतन वर्ष के नये सूरज के प्रचंड किरणों से जाग उठे हमारे संकल्पों - संकेतों का नया सवेरा जो

हर हर में

घर घर में

मन मन में

तन तन में

आत्म आत्म में उगा नूतन वर्ष सवेरा

जो आपको हमारा अभिनंदन पाठवे

जो आपको योग्यता प्रदान करे

ऐसी श्री प्रभु से प्रार्थना सह

" जय श्री कृष्ण "

" Vibrant Pushti "

आप सर्वे को "नूतन वर्ष अभिनंदन!

आप सर्वे को पता ही हो सकता है की

यह नूतन वर्ष का आशीर्वाद और शुभेच्छा जो हम पाते है, यह सत्य वचन ही होता है,

उनसे हम

प्रेरणामय - प्रगतिशील - यशस्वीता - ऐश्वर्य - और जीवन का माधुर्य चोक्कस पाते ही है ।

यह सत्य वचन है।

हमारी संस्कृति में यह कहीं बार सिद्ध हुआ है।

आपने हमारी संस्कृति की धरोहरों में - रामायण - महाभारत समझी होगी उनमें कहीं द्रष्टांत है

जब जब भी कोई शुभकामनाएं करता है और आशीर्वाद और शुभेच्छा पाते है वह उन्हें पाता ही है।

यह आशीर्वाद और शुभेच्छा एक ऐसी सिद्ध ज्ञानता - साक्षरता - भावता है जो हमारी अंतर आत्म से प्रकट होती है, जो सदा विशुद्ध, पवित्र और आंतर वचनबद्ध होती है, जो सिद्ध होती है।

आप कभी भी अपने अंतर आत्म से कभी भी योग्य सत्यवचनीय आशीर्वाद और शुभेच्छा पाठवना।

" Vibrant Pushti "

परम सत्य

जिसका जल शुद्ध वह सदा विशुद्ध

जिसका जल अशुद्ध वह सदा निर्बुद्ध

हमारी गंगा मैली

हमारी यमुना मैली

हमारी नियति मैली

हमारी कृत्ति मैली

जो स्थली की जल धारा मैली

वह स्थली का निवासी मैला

विचारों से मैला

नजरों से मैला

तन से मैला

मन से मैला

धन से मैला

क्रियाओं से मैला

गति से मैला

संबंधों से मैला

रिश्तों से मैला

विश्वास से मैला

वचनों से मैला

धर्म से मैला

विज्ञानों से मैला

भावनाओं से मैला

संस्कारों से मैला

नीतियों से मैला

वंश परंपरा से मैला

संस्कृति से मैला

शासन से मैला

सलामती से मैला

सोच लो! हम है मैले?

कितने अवतारों ने जन्म धरा?

" Vibrant Pushti "

ढलते सूरज ने सोचा

मैं सूबह उगता हूँ

तब कितनी उर्जा और संकल्प के साथ

जब शाम हो रही होती है

तब तक मेरे हर संकल्प पूरे हुए देखता हूँ

और

उर्जा इतनी ही रहती है

तब तो शाम को सुहानी करता करता ढलता हूँ।

इतनी उर्जा से मैं सारे ब्रहमांड के हर तत्व को मैं उर्जावान करते करते ही आगे धपता हूँ, फिर भी यह ब्रहमांड के कहीं तत्वों बिन उर्जित क्यूँ है?

क्या मेरी उर्जा असरविहीन है?

या

वह तत्वों ऐसे है - चाहे कितना भी सिंचो पर वह नही परिवर्तित होंगे।

ओहह! यह कैसा? ऐसा क्यूँ?

यह कैसा काल है?

ऐसा क्या प्रभाव है, जो यह तत्वों उर्जा विहीन रहते है और होते है?

" Vibrant Pushti "

कितनी नजदीक से पहचानता हूँ मेरे साथ रहते व्यक्तिओं को

और मुझे भी पहचानते है यही साथ रहते व्यक्तिओं।

मुझे मेरी खुद की पहचान के लिए

मुझे मेरी खुद की जीवन शैली के लिए

मुझे मेरी खुद की जीवन सच्चाई के लिए

मुझे मेरी खुद का भविष्य संवारने के लिए

मुझे मेरे खुद को योग्य करने के लिए

मैं जागता रहता हूँ - मैं समझता रहता हूँ

हाँ! इसे कोई मेरा स्वार्थ कहते है।

हाँ! इसे कोई अपना ज्ञान कहता है।

हाँ! इसे कोई अपना भाव कहता है।

हाँ! इसे कोई अपनी जागृतता कहते है।

हाँ! इसे कोई अपनी योग्यता कहते है।

हाँ! इसे कोई अपने आप में नासमझ भी हो सकते है।

हाँ! इसे कोई अपने जीवन की गुमराहों में डूबा है।

जीवन की यह गति मुझे क्या पहचानती है? मुझे कैसे यहां पहुंचना?

सोचो! अचूक सोचना!

यही सोच के साथ जो शांती पाओ

यही सोच के साथ जो आनंद पाओ

तो मेरा आपको प्रणाम!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

हमने कभी सूरज को छूआ है?

हमने कभी चंद्र को छूआ है?

हमने कभी आकाश को छूआ है?

हमने कभी तारें को छूआ है?

हमने धरती को छूआ

हमने सागर को छूआ

हमने नदी को छूआ

हमने हवा को छूआ

हमने वनस्पति को छूआ

धरती को छूआ

सागर को छूआ

नदी को छूआ

हवा को छूआ

वनस्पति को छूआ

तो

जन्म समझते है

जीवन समझते है

कहीं सिद्धांत समझते है

कहीं परिवर्तन समझते है

कहीं तत्व समझते है

कहीं नवत्व समझते है

अगर हम

सूरज को छू लेते

चंद्र को छू लेते

आकाश को छू लेते

तारें को छू लेते

तो क्या हो जाता?

क्यूँकि हम बने है पंच महातत्वों से

यही सर्व तत्वों छू लेते तो क्या होता?

पर पहले एक बात कहेंदु

अभी हम धरती को छूते है

अभी हम सागर को छूते है

अभी हम नदी को छूते है

अभी हम हवा को छूते है

अभी हम वनस्पति को छूते है

तो यही सभी का क्या हाल होता है?

सदा गंदगी

सदा अविचारी

सदा स्वार्थी

सदा अज्ञानी

सदा अधर्मी

सदा अकर्मी

सदा रोगी

सदा भोगी

सदा जन्मी

सदा भ्रमी

सदा तर्की

सदा विरोधी

सदा अविद्यी

सदा तृष्णी

सदा ऋणी

सदा वृद्धि

सदा दुर्बल

सदा दूर्बुद्धि

सदा दोषी

सदा द्रोही

सदा विखुटी

हमारे यही जीवन के साथ साथ

जिन्होंने यह सूरज को छूआ है

जिन्होंने यह चंद्र को छूआ है

जिन्होंने यह आकाश को छूआ है

जिन्होंने यह तारें को छूआ है

वह कैसे है?

तो हम ज्ञानी हो जाते

तो हम वैज्ञानिक हो जाते

तो हम प्रज्ञानी हो जाते

तो हम सर्वज्ञ हो जाते

ओहह!

तो यह सृष्टि कैसी होगी?

तो यह प्रकृति कैसी होगी?

तो यह योनीयाँ कैसी होगी?

तो यह जन्म कैसा होगा?

तो यह जीवन कैसा होगा?

हम ऐसे कहीं व्यक्तियों को जानते है पर हम हमारी वृत्ति - कृत्ति - युति - अनीति - गति - विकृति से हम उन्हें समझते नही है, हाँ! जो समझ जाते है वह अवश्य जान जाते है

जन्म - जीवन - मृत्यु और पुरुषार्थ।

" Vibrant Pushti "

कितनी रीत से

कितनी तिथि से

कितनी लीला से

कितनी धारा से

कितनी पद्धति से

कितनी संस्कृति से

कितनी मान्यता से

कितनी धार्मिकता से

कितने संकेत से

कितने ज्ञान से

कितने भाव से

कितने उत्सव से

कितने मनोरथ से

कितने सूत्रों से

कितने शास्त्र से

कितने विज्ञान से

कितने संबंध से

कितने बंधन से

हमे जागृत करते रहते है

यह हमारा कुटुंब

यह हमारा समाज

यह हमारा धर्म

यह हमारे पूर्वजों

यह हमारे रीति रिवाजों

यह हमारे उत्सवों

यह हमारे संबंधों

यह हमारे चरित्रों

यह हमारा इतिहास

यह हमारी संस्कृति

जीवन की हर पल जगाईये

हर रीति - नीति - प्रीति - संस्कृति से हम जुडे है

जो हमारा जीवन योग्य और समृद्ध करें

जो हमारा जीवन आनंद और शांतिमय करें

जो हमारा जीवन सुखमय और गतिमय करें

आज प्रबोधिनी एकादशी

यही संकेत और दिशा सूचक है।

बार बार श्री प्रभु हमारे लिए हमारा साथ निभाने हमारी साथ रहे ऐसी सर्वोत्तम संस्कृति में हमने जन्म और जीवन धारण किया है, हम कितने भाग्यशाली है!

ऐसी संस्कृति और भूमि को दंडवत प्रणाम और गर्व अनुभवते यह संस्कृति को योग्य दिशा में गति करने सदा तत्पर रहे यही ही हमारे जीवन की सार्थकता है।

" Vibrant Pushti "

" जय जय श्री प्रभु "

"मार्ग"

"रास्ता"

"पथ"

मार्ग किसे कहते है?

रास्ता किसे कहते है?

पथ किसे कहते है?

हम क्या मानते है यह

मार्ग - रास्ता - पथ

जो जो मन और पग जहां जहां चलता है उन्हें मार्ग - रास्ता और पथ कहते है।

हाँ! हमने जबसे जन्म धरा और जीवन जीने का अधिकार पाया तबसे हम हमारे मन और पग से चलते है और जो जो दिशा में चलते है वही मार्ग है - वही रास्ता है और वही पथ है।

हाँ! जो दिशा में एक बार चल दिए यह हमारे लिए सदा के लिए मार्ग - रास्ता और पथ है, चाहे वह हमें कहीं भी ले जाये - हमसे कुछ भी करले और कराले हम अडग यही ही मार्ग - रास्ता और पथ पर चलेंगे और चलायेंगे।

चाहे हमें कोई तकलीफ हो

चाहे हमें कोई समझ न हो

चाहे हमें कोई पहचान न हो

चाहे हमारा अकस्मात हो जाये

चाहे हम अंधे हो

चाहे हम धर्मांध हो

चाहे हम भटक जाये

चाहे हम लुट जाये

चाहे हम खो जाये

चाहे हम बरबाद हो जाये

चाहे हम तुट जाये

चाहे हम मिट जाये

ओहहह!

आज इसलिए मार्ग - रास्ता और पथ का अस्तित्व को ढूंढना पडता है -

चाहे धर्मगुरु हो

चाहे आचार्य हो

चाहे शिक्षक हो

चाहे वैज्ञानिक हो

चाहे अनुस्नातक हो

चाहे प्रधान हो

चाहे हम कोई भी हो

कितनी सदियाँ बिखर जायेगी

कितनी प्रकृति बदल जायेगी

कितनी सृष्टि पलट जायेगी

कितने धर्म परिवर्तन हो जायेगा

पर न हम यह मार्ग - रास्ता और पथ पर चलने की धारा को बदलेंगे न हम हमारा मन और पग का नियमन करेंगे!

" Vibrant Pushti "

"आध्यात्मिक" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"अंधश्रद्धा और मान्यता" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"धर्म और संस्कृति" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"जन्म और जीवन" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"तन मन और धन" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"अनुभव और ज्ञान" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"परिवर्तन और पुरुषार्थ" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

"हम और कुटुंब" का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

" Vibrant Pushti "

चारों ओर से गूँज रहा है

श्री प्रभु का प्रेम

कोई चित्रजी से लीला दर्शन कराए

कोई कीर्तन के गान से छू आए

कोई अपनी अनुभूति से भक्ति लीला समझाए

कोई कथा वार्ता से सिद्धांत चरित्र बहाए

कोई अपनी धून में रह कर अपना स्पर्श लुटाए

कोई प्रतिक वस्त्र का चोला पहनकर आचरण जगाए

कोई माला तिलक धरकर धर्मसुधा बुझाए

कोई गृहसेवा पुष्ट कर धर्म धजा लहराए

कोई धर्म सिद्धांत जगा कर अज्ञान की दुहाई मिटाए

कोई समझ नासमझ हो कर सदा खुदकी भक्ति नैया तराए

कोई कौन क्या? कौन जो? खोद खोदकर अज्ञान की घोर तपस्याए

कोई स्थली स्थली पथ पथ परिक्रमा कर धर्म रज से पवित्राए

मैं अकेला जीवन पंछी उड उड कर भक्तिज्ञान जीवन के लिए भटकाऊँ

कहीं कभी पा जाऊँ श्री प्रभु को जन्म सार्थक संधाऊँ।

" Vibrant Pushti "

अगर हम खुद को मनुष्य समझते है तो कभी

हवा से बातें करो

धरती से बातें करो

नदी या सागर से बातें करो

वनस्पति से बातें करो

फूलों से बातें करो

फलों से बातें करो

सूर्य से बातें करो

चंद्र से बाते करो

आकाश से बातें करो

शायद हमें कुछ कहदे हमारी सत्यता

हम हमारे नैन से देखते है

हम हमारे मन से सोचते है

हम हमारे धन से उपभोगते है

कि

वह एक हो कर ही रहते है

वह एक हो कर ही जीते है

वह एक हो कर ही मिटते है

वह एक हो कर ही लुटाते है

वह एक हो कर ही आनंदते है

वह एक हो कर ही परिवर्तते है

और हम

न एक हो कर रहते है

खुद को एक दूसरे से दूर करते है

न एक हो कर जीते है

खुद का जीवन स्तर ऊंचा करने एक दूसरे को हराते है

न एक हो कर मिटते है

खुद को जिंदा रखने दूसरे को मिटाते है

न एक हो कर लुटाते है

खुद को सलामत करने दूसरे को लुटते है

न एक हो कर आनंदते है

खुद के आनंद के लिए दूसरे का आनंद ध्वंस करते है

न एक हो कर परिवर्तते है

खुद को परिवर्तन की समझ नही और दूसरे में परिवर्तन चाहते है

सच! कैसे है हम?

" Vibrant Pushti "

मैंने मेरे विचार कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरे अक्षर कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरे स्वर कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरे कार्य कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरे डग कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरे हस्त कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरा धर्म कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरा संदेश कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरी महक कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी दृष्टि कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी वृत्ति कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी सृष्टि कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी गूँज कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी किर्ति कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी मान्यता कहीं तक पहुंचायी

मेरी मंजिल तक पहुंचने

मेरे ध्येय तक पहुंचने

मेरे सुख तक पहुंचने

मेरी मुक्ति तक पहुंचने

मेरे ज्ञान तक पहुंचने

मेरे भाव तक पहुंचने

मेरी प्रीत तक पहुंचने

मेरी जिज्ञासा तक पहुंचने

मेरी आकांक्षा तक पहुंचने

मेरी प्यास तक पहुंचने

मेरी आश तक पहुंचने

मेरे लक्ष्य तक पहुंचने

मेरे आनंद तक पहुंचने

यही ही है मेरा जीवन पुरुषार्थ

जो आजतक जो पहुंचा हूँ

जो अभी मुझे स्पर्शती है।

" Vibrant Pushti "

सोचते है

कितनी श्री मद् भागवत सप्ताह होती है

कितनी श्री रामायण की कथा होती है

कितने श्री हनुमान चालीसा के पाठ होते है

कितने भगवान की पूजा होती है

कितने हवेली में मनोरथ होते है

कितने मंदिर में दर्शन होते है

कितनी उपासना और साधना होती है

कितने यज्ञ होते है

कितनी भजन संध्या होती है

कितने भक्ति के उत्सवों होते है

कितने धर्म शास्त्र आधारित दिक्षा होती है

कितने शास्त्रोच्चार होते है

कितने अनुष्ठान होते है

कितनी गृह सेवा होती है

कितनी दान दक्षिणा होती है

कितने धाम परिक्रमा होती है

कितनी धर्म पद यात्रा होती है

अरे! कितनी मान्यता और बाधाएं होती है

सोच कर समझना

हम जीते जीते क्या क्या धर्मोक्तक और आध्यात्मिक क्या क्या नही करते है?

ओहह!

कितने संत - बापु - कथाकार - गुरु और सन्यासी है?

क्या हमारा अहंकार तुटा?

क्या हमारी माया छूटी?

क्या हमारा अंधकार मिटा?

क्या हमारे जीवन सुधार हुआ?

क्या हममें सलामती जागी?

क्या हमने योग्यता पायी?

मैं नकारात्मक नही जगा रहा हूँ

मैं खुदको जगा रहा हूँ खुद के जीवन के अनुभव से

मैं खुदको समझ रहा हूँ खुद के जीवन सिद्धांत से

मैं खुदको घड रहा हूँ यह संसार - समाज और संस्कृति से

क्यूँकि! जो धरती - प्रकृति - सृष्टि - संस्कृति और धर्म से जो पाया है या जो ग्रहण किया है या अपनाया है वह पुरुषार्थ को पहचानना तो चाहिए ही।

" Vibrant Pushti "

खिले पूर्णता से उन्हें प्रभु का आविष्कार कहते है

जैसे उगे सूरज

जैसे उगे चंद्र

जैसे खिले फूल

जैसे खिले धरती

जैसे खिले आसमान

जैसे बहे सागर

जैसे खिले हृदय

जैसे खिले मन

जैसे खिले संगीत

जैसे खिले प्रीत

हम भी खिले खुले जीवन में तो प्रभु रंग रस लीला में डूबोय

उगे किरण खिले चांदनी मन हृदय धरती समतल में जगोय

बसे आसमान जागे सागर खिले मधुर संगीत फूल जीवन प्रभु प्रीत होय

" Vibrant Pushti "

मेरे मित्रों! आप सबकी शुभ कामनाएं और शुभ संबंध से ही हम समृद्ध और योग्य है।

यु ही सदा शुभ कामनाएं बरसती रहे ऐसी सदा अभिलाषा!

सदा जगाना ऐसे दीपक

सदा रखना निस्वार्थ संबंध

सदा करना कृपा स्नेह की

आपके सदा हम ऋणी रहे

जिससे सदा हमारा तन मन तुम्हें वंदन करे।

"जय श्री कृष्ण"

" Vibrant Pushti "

"मंगलाचरण" यह ऐसी रचना और ऐसी रीत है कि जीवन सदा मंगल हो और रहे। "मंगलाचरण" के स्पर्श में जो भी जीव तत्व आये वह मंगल हो जाता है।

विनंती करते है पहले से जो संग और स्पर्श और रंग उडा रहे है उन्हें अचूक समझो और खुद का मंगलाचरण रचो और करो।

अभी तक जो भी कहा है उन्हें धैर्य से चोक्कस समझना।

" Vibrant Pushti "

द्वार पर पहुँचते है श्री प्रभु के दर्शन करने
क्या क्या साथ रखते है?
सच कहे
जब पधारते है श्री प्रभु द्वार हमारे
क्या क्या साथ रखते है?
क्या क्या ख्याल
क्या क्या भेंट
क्या क्या सामग्री
क्या क्या आशा
क्यूँ करते है तमाशा?
जब पधारे हमारे द्वार श्री प्रभु
नहीं कोई आहट
नहीं कोई संकेत
नहीं कोई खेवना
केवल देना ही देना
हंसते हंसते निकल जाना
यही मर्यादा यही रीत पुष्टि
घट घट आनंद लूटाते जाये।

" Vibrant Pushti "

श्री यमुना निकुंज को चले
करने यमुना पान
वंदन करके नीर छूये
व्रज बूँद तन मन हो गये
श्री गिरिराज परिक्रमा को चले
करने भक्त वत्सल दर्शन
वंदन करके चरण छूये
व्रज रज अंग अंग हो गये
श्री श्रीनाथजी धाम को चले
करने दंडवत प्रणाम
वंदन करके कीर्तन करे
अंतर शुद्ध वृद्ध हो गये
श्री चंपारण्य बैठक को चले
करने ब्रह्मसंबंध ज्ञान
वंदन करके मंत्र शिखे
पुष्टि प्रीत जीवनमें डूब गये
" Vibrant Pushti "

"श्रीमोहन गुरु प्रेम वपु

वन्दौं पंकज पांय।

मोपैं पूरन करि कृपा

दीनैं सन्त बताय।।

तेई हरिजन इष्ट मम

तिनहों को शिर नांउ।

तिन हीं के जु प्रसाद तैं

तिन हीं को जस गांउ।। "

वैष्णव की व्याख्या दर्शायी है।

"श्रीमोहन गुरु प्रेम वपु"

जो परम आत्म तत्व श्री गुरु जो केवल और केवल श्रीमोहन के प्रेम में वृद्धि करे

"वन्दौं पंकज पांय"

जो आत्म तत्व जगत के कादव कीचड में भी विशुद्ध कमल खिलाये, यह तत्व को मैं शत शत वंदन करता हूँ।

"मोपे पूरन करि कृपा"

जो गुरुजी मुझे अधम पर योग्य कृपा करे इतना अलौकिक यह जगत में कौन हो सकते है?

"दीने सन्त बताय"

जो गुरु सदा कृपा करे और अपनों में दीनता का सिंचन करके निर्मोही और निर्मल घडे जिससे हम सन्त दर्शन पाये।

संत का सानिध्य केवल दीनता से प्राप्त होता है। कितनी अदभुत सिद्धता है श्रीगुरु की। ऐसे आत्मज वैष्णवता के अधिकारी है।

"तेई हरिजन इष्ट मम"

मेरे इष्ट हरिजन वहीं है जो केवल दीन, संस्कृत, सदाचार, विशुद्ध और सत्याग्रही हो वहीँ मेरे लिए सर्व शुद्ध आत्मज है। चाहे वह कोई भी जाती का हो! केवल ब्रह्म स्मरण, संस्कृत सिद्धांत वादी हो। यह जन ही मेरे लिए परम भक्त है, जो मेरे लिए न अशुद्ध है, अज्ञानी है। मेरे लिए योग्य शिल, साक्षर और साथी है।

" तिनहों को शिर नांउ "

ओहहह! यही आत्म मेरे लिए पवित्र और अग्नि स्वरूप है, जो स्नान करे वही जल से मैं अंग अंग शिर स्नान करु, वही जल से मैं आंतरिक पान करु।

" तिन हीं के जु प्रसाद तैं "

मेरा अन्न जो मेरा आंतरिक सिंचन करे और प्रसाद आरोगने से आंतरिक शुद्धि करे उनके मुख या उनके घर का मैं प्रसाद प्रेम सभर आरोगुं।

" तिन हीं को जस गांउ "

यही मेरे सुश्रुत, यही मेरे संस्कृत, यही मेरे उदभुक्त, यही मेरे सुकृत है। जिसका सदा गुण गांउ। जो मेरी नीत नीत अज्ञान गांठ तोडे। सदा चरण शरण प्रेम रस बरसाउ।

यही मेरे वैष्णव है, उनका मैं दास हूँ।

" Vibrant Pushti "

पुष्टिमार्ग में

नयनामृत

कर्णामृत

वचनामृत

श्वासामृत

हृदयामृत

अधरामृत

चरणामृत

स्पर्शामृत

विरहामृत

मधुरामृत

लीलामृत

प्रेमामृत

वाग्मृत

साध्यमृत

प्रमयामृत

निरोधामृत

सख्यामृत

रजामृत

स्पंदनामृत

ज्ञानामृत

भावामृत

दानामृत

जीवनामृत

भजनामृत

कर्मामृत

कथामृत

मृत्यामृत

पंचामृत

पुष्टामृत

कहीं अमृत से हमारा सिंचन करके रसामृत धारा जगायी, छूये, स्पर्श कराये, एकात्म कराये।

हमने कौनसा अमृत पाया?

हमने कौनसा अमृत की अनुभूति पायी?

हम कब तक यह पुष्टि से अमर है?

" Vibrant Pushti "

मेरे सांसों में कौन है - मेरा साँवरा

मेरे ह्रदय में कौन है - मेरा कन्हैया

मेरे मन में कौन है - मेरा गोपाला

मेरे तन में कौन है - मेरा श्याम

मेरे अधर पर कौन है - मेरे श्री नाथजी

मेरे लहू में कौन है - मेरे यमुनाजी

मेरे विचार में कौन है - श्री सुबोधिनीजी

मेरी कृति में कौन है - श्री अष्ठसखाजी

मेरे नयन में कौन है - श्री बालकृष्ण लालजी

मेरे अंग के निकट कौन है - श्री द्वारकाधीशजी

मेरी पुष्टि में कौन है - श्री वल्लभाचार्यजी

मेरी सृष्टि में कौन है - श्री मदनमोहनजी

मेरी द्रष्टि में कौन है - श्री कृष्णचंद्रजी

" Vibrant Puhti "

भाग्यशाली है हम इतने हमारे ह्रदय को व्रज रचायो

भाग्यशाली है हम इतने हमारी धरती पर व्रज रचायो

भाग्यशाली है हम इतने हमारे देश में व्रज रचायो

भाग्यशाली है हम इतने हमारे धर्म में व्रज रचायो

भाग्यशाली है हम इतने हमारी संस्कृति में व्रज रचायो

आत्म से खेलने परमात्मा

बाल स्वरुप रचायो

अलौकिक लीला बरसायी हमारे जन्म जन्म से खुद बंधायो

शत् शत् प्रणाम!

शत् शत् धन्यता!

हमारे आंगन में रास रचायो!

" Vibrant Pushti "

"व्रज" और "व्रजरज" को जानना, समझना, पहचानना और स्पर्श पाना और स्पर्श से अपने रोम रोम में जगाना श्रीकृष्ण भक्ति है, यही भक्ति से श्रीगोपिजन भाव जगाना पुष्टि भक्ति है, यही पुष्टि भक्ति से श्रीकृष्ण ह्रदयेश्वरी श्रीराधाजी को जानना, समझना, पहचानना - स्पर्श करना व्रज को अपने अंग अंग बसाना हमारा समर्पण है।

"व्रज" ओहहह! कहीं बार यह शब्द सुने, कहीं बार यह शब्द पढें और कहीं बार इन्हें छूने का प्रयत्न किया। हमने जब भी सुना, जब भी पढा और जब भी छूने का प्रयत्न किया हर बार कुछ अजीब सा महसूस होता है, क्यूँकी हम हिन्दु है और हमने यह धर्म अपनाया है। हमने अपनाया है तो अवश्य हमें यह धर्म को योग्यता से समझना और समझ कर जीवन जीना ही हमारी वैचारिकता और कृतज्ञता है।

"व्रज" सुनते ही अंग में रोमांच जागता है।

"व्रज" पढते ही मन कहीं खींचता जाता है।

"व्रज" लिखते ही ज्ञान और भाव की धारा आंतर मन और आंतर ह्रदय के तार को कोई अलौकिक अमृत धारा से जोड देती है।

क्यूँ?

क्यूँकि हमारा सिंचन यही आत्मीय संस्कृति से जुडा है, हमें यह बार बार जगाता है - हमें आनंदमय जीवन की शिक्षा प्रदान करता रहता है।

"व्रज"

कितनी अलौकिकता है इनमें!

कितनी विशुद्धता है इनमें!

कितनी परिवर्तनता है इनमें!

कितनी सामर्थ्यता है इनमें!

कितनी प्रीत की योग्यता है इनमें!

कितनी क्षमापना है इनमें!

कितनी अखंडता है इनमें!

कितनी विचलक्षणता है इनमें!

कितना विश्वास है इनमें!

कितना आधार है इनमें!

सच यह समझना अति आवश्यक है, यही हमारी योग्य जीवन यात्रा है।

" Vibrant Pushti "

"व्रज व्हालु रे वैकुंठ नहीं आवु"

क्यूँ?

यह जानना हर एक को अति आवश्यक है। क्यूँकि हम व्रज भूमि से जुडे है, हमारी संस्कृति व्रज से जुडी है, हमारा तन मन धन और आत्मा व्रज से जुडा है, हमारा जीवन व्रज से ही है।

व्रज को पहचानना हमारी योग्यता है।

व्रज में बस जाना हमारा कर्तव्य है।

व्रज से एक हो जाना हमारा धर्म है।

व्रज को छूना हमारी रीत है।

व्रज में डूब जाना हमारे आत्मीय भाव है।

व्रज में समा जाना हमारी सिद्धि है।

व्रज को पुकारना हमारा ज्ञान है।

व्रज को हमारी अंदर जगाना हमारी भक्ति है।

व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज

" Vibrant Pushti "

"व्रज" श्री प्रभु का ह्रदय है। ऋषिओं ने कहा, शास्त्रों में पढा। कहीं माहात्म्यों के प्रवचन में सुना, कहीं भक्तों और आचार्यों के चरित्रों को भी छूया, खुद ने परिक्रमा करके हर एक स्थली से स्पर्श पाने की कोशिश से "व्रज" को समझने के हर प्रयत्न से जुटे रहते है। और सच कहे तो हम अपने जीवन और शरीर के साथ तुलना करके भी "व्रज" की खोज करते रहते है।

हर चिंतन से सुक्ष्म से सुक्ष्म परमानंद की अनुभूति करने सदा कर्तव्यशिल रहते है।

यह कर्तव्यशिल रहना हमारी संस्कृति है और जागृतता है, यही समझ से हमारा जीवन को आत्मीय उत्कृष्ट करते है, यही उत्कृष्टता को पा कर खुद को धन्य समझ कर जीवन गुजारते है।

सच कहे तो यह एक सामान्यता है, पर प्रयत्न योग्य है। यही से हमारी आत्मीय शिक्षा आरंभ होती है।

" Vibrant Pushti "
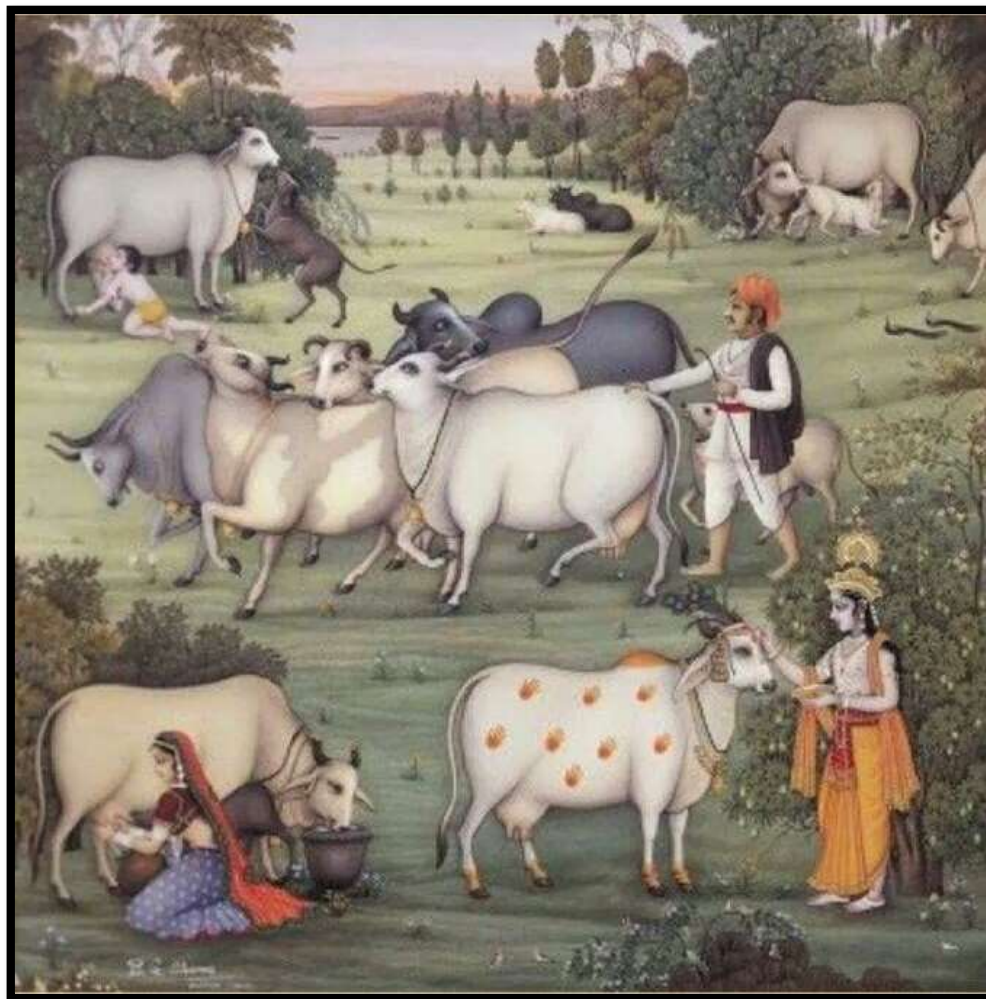
यमुना की परिक्रमा
कलिन्द गिरि मस्तिष्क से
प्रयाग जुडना खुद के रक्षण से
कहीं रज कहीं स्पर्श कहीं बूँद
कहीं जोग कहीं संजोग कहीं संयोग
कैसे कैसे योग कैसे कैसे वियोग
धारा से धर्म धर्म से नियमन
जीवन में यही है कर्म मिलन
ओहह! यमुना
बूँद है पुष्टि किरण
नयन से दृष्टि किरण
बसे तो दर्शन होय
न बसे तो मन जगाय
छूये ही छूये रीत अंतर की
यमुना ही है मेरे धडकन की
जो सदा रहे साथ सांसों की
पल पल गूंजे यमुना यमुनाजी
" Vibrant Pushti "

"श्री वल्लभ" ऐसे रचे है यह पुष्टि रीत

जो देखे तो दिवाना होय

जो छूये तो परवाना होय

जो डूबे तो अनुरागी होय

जो पीये तो पुष्टि प्रियतम होय।

" Vibrant Pushti "

"श्रीवल्लभ चरण स्पर्श"

"श्रीविठ्ठल" प्रकट भयो

रीत पठायो सेवा प्रीत को

रोम रोम श्रीप्रभु पधरायो

पुष्टि सिद्धांत की शिक्षा निराली

जीवन मधुर मधुर कियो

अति उमंग से यमुना स्फूरे

रज रज गोवर्धन उडाये

सांस सांस का सिंचन जागे

पुष्टि रस से जीवन उभरे

" Vibrant Pushti "

"गोपि प्रीत" यह अक्षर और शब्द लिखते लिखते विचार और नयन अधिर हो उठे।

यह पढते अंतर में स्पर्श होता है, यह लिखते अंतर में स्पर्श होता है, यह दिखते अंतर में स्पर्श होता है।

क्यूँ?

हिन्दु संस्कृति की धरोहर है। हिन्दुत्व की आराधना है।

हिन्दुत्व का समर्थन है।

हिन्दुत्व का समर्पण है।

हिन्दुत्व की पूजा है।

हिन्दुत्व की भक्ति है।

हिन्दुत्व का शक्ति है।

हिन्दुत्व की सर्वज्ञता है।

हिन्दुत्व का प्रणाम है।

हिन्दुत्व की वंदना है।

हिन्दुत्व की पहचान है।

हिन्दुत्व का चरित्र है।

ओहहह!

न समझना यह आजकल के क्षुब्ध, अशुद्ध, अघटित, निंदनीय, निम्न, फरेबी, अविश्वसनीय, विकृत, क्षोभनीय, क्षणभंगुर, बेशर्म, निर्लज्ज प्रेम की रीत है, भावना है, रमत है।

यह तो

अखंड है।

अलौकिक है।

सुमधुर है।

परम है।

अखलित है।

सौन्दर्य है।

संस्कृत है।

विशुद्ध है।

आत्मीय है।

पवित्र है।

निर्मल है।

निर्भय है।

पूजनीय है।

निरंतर है।

" Vibrant Pushti "

सत्संग से भजन
भजन से दर्शन
दर्शन से चरण
चरण से शरण
शरण से सुगंध
सुगंध से स्पंदन
स्पंदन से स्पर्श
स्पर्श से वल्लभ
वल्लभ से सौंदर्य
सौंदर्य से एकात्म
एकात्म से माधुर्य
माधुर्य से व्रजरज
व्रजरज से गिरिराज
गिरिराज से यमुना
यमुना से व्रजराज
व्रजराज से गोकुल
गोकुल से गोकुलनाथ
यही है पुष्टि प्रीत पहचान

" Vibrant Pushti "

"श्री गिरिराजधरण की जय"

सकारात्मक पुष्टि स्पंदन सचित्र संस्करण भाग - अष्ट

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti

53, सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507

" जय श्री कृष्ण "